17.	शंकरराव जगताप आर्टस् ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोलीमधील ग्रंथालयात क्यु आर कोड (QR CODE) टेक्नॉलॉजीचा वापर श्री. प्रविण चंद्रकांत कुंभार	92-96
18.	ICT INITIATIVES OF MHRD: AN OVERVIEW Supriya M. Nawale	97-102
19.	ICT IN ACADEMIC LIBRARIES Shirke Anil Ananda	103-107
20.	वाचन आजच्या काळाची गरज सौ. शितल सावंत	108-111
21.	एकविसाव्या शतकातील शैक्षणिक ग्रंथालय डॉ.विजयकुमार एन.मुलीमनि	112-116
22.	हिंदी कहानी साहित्य मे वृध्दावस्था विमर्श डॉ.संगिता सूर्यकांत चित्रकोटी	117-121
23.	२१ वीं सदी के हिंदी साहित्य में नारी विमर्श डॉ. ज्योती गायकवाड	122-124
24.	मीडिया और भारतीय समाज डॉ. श्रीकांत पाटील	125-127
25.	**Post-colonial Ghanaian SocietyinA. K. Armah's *The Beautyful Ones Are Not Yet Born*** Santosh Chandrakant Rade	128-132
26.	**Postulation of Love, Separation, Destinyand Reunion in Ravinder Singh's Popular Fiction *I Too Had A Love Story*** Mr. Kshirsagar Rajendra Baban	133-138
27.	**21ST CENTURY AS A MIRROR FOR WOMEN EMPOWERMENT** Dhanshri S. Bhadalkar	139-142
28.	**CHALLENGES OF WOMEN EMPOWERMENT IN INDIAN RURAL AREA: ANALYTICAL STUDY** Prof. Manasi Chandrakant Kawatkar	143-149
29.	**DALIT LITERATURE IN INDIA: AN OVERVIEW** Inamdar M.M.	150-152
30.	**Study of Feminine Sensibility and Female Psyche with Reference to Vijay Tendulkar's *Kanyadaan* and *Sakharam Binder*** Babasaheb Ramdas Kangune	153-158
31.	**समकालीन वाड्.मयीन संस्कृती** प्रा. डॉ. बाळासाहेब आण्णा सतार	159-166
32.	**महात्मा गांधीजींच्या स्त्रीविषयक विचारांची चिकीत्सा** प्रा.निकम एम.एस	167-173
33.	**जागतिकीकरणाचा प्रभाव असलेली मराठी कविता** प्रा. अनिल प्रभाकर उबाळे	174-179
34.	**जागतिकीकरण व मराठी कादंबरी** प्रा. अनिल प्रभाकर उबाळे	180-183
35.	**दलित स्त्रीकवितेची वेगळी फिर्याद** प्रा. डॉ. बाबासाहेब पिरगोंडा नाईक	184-187
36.	**'दलित कविता स्वरुप आणि वाटचाल'**	188-190

Studies in Indian Place Names
UGC Care Listed Journal

ISSN: 2394-3114

Vol-40-Issue-89-March -2020

हिंदी कहानी साहित्य मे वृध्दावस्था विमर्श

डॉ.संगिता सूर्यकांत चित्रकोटी

विभागाध्यक्ष, हिंदी को.ए.सो.लक्ष्मी–शालिनी महिला महाविद्यालय, पेझारी, अलिबाग रायगड.

आधुनिक हिंदी साहित्य विविध विमर्शों की चर्चा से समृध्द बना है। वर्तमान समय में 'वृध्दावस्था विमर्श' ने हिंदी साहित्य में दस्तक दी है। वृध्दों की दयनीय दशा और नयी पीढी का उनके साथ अमानवीय व्यवहार को देखते हुए वृध्दों की चिंताएँ, समस्याएँ और सरोकार पर गंभीरता से बात होना उचित ही है। भारतीय संस्कृति में वृध्दों को अत्यंत उच्च एवं आदर्श स्थान प्राप्त है। घर का बुजुर्ग व्यक्ति घर का मुखिया होता था। घर की सारी बागडौर उसी के हाथों में होती थी। बुजुर्गों को सम्मान दिया जाता था। बच्चे बाप के चेहरे में ईश्वर देखते थे और मॉ के चरणों में स्वर्ग होता था। उनके निर्णय के विरुध्द नहीं जाने का एक रिवाज ही रहा था क्योंकि उनके पास अनुभवों का भंडार होता था। आज भी गॉवों में संयुक्त परिवार पाए जाते है और घर के बुजुर्ग व्यक्ति के अनुशासन में सारे निर्णय लिए जाते है। बुजुर्ग व्यक्ति एक बडे से बरगद के पेड की तरह होता है जिसके छॉव में परिवार के सारे सदस्य सुख, आनंद और आराम के साथ सुस्ताते है। परंतु अफसोस! आज भौतिकवादी युग में संयुक्त परिवार टूट गया है। एकल परिवार की वजह से वृध्दों की दुनिया सिकुड और सीमट गई है। अपने ही परिवार में वे अजनबी बन गए है। नयी पीढी की नजर में बूढा व्यक्ति निष्क्रीय है, अनुपयोगी है इसलिए उन्हें घर से बाहर का रास्ता दिखाया जाता है। घर से बेदखल वृध्द व्यक्ति वृध्दाश्रम का आसरा पाते है और वृध्दावस्था मेंअसहनीय पीडा भोगते है। स्वार्थी प्रवृत्तिके कारण रिश्तों में आ रही गिरावट को हिंदी साहित्य में देखा जा सकता है।

'सूर्यबाला' की 'निर्वासित' कहानी में चित्रित है एक बूढे दम्पति, जो अपना बुढापे का जीवन जीन के लिए अभिशप्त है। रिटायर्टमेंट के बाद दोनों पति–पत्नी अपने गॉव के घर में खुशी खुशी रहते थे। बडा बेटा राजन गॉव के घर को किराए पर चढाकर उन्हें अपनें साथ रहने के लिए बुलाता है। राजन का मकान तो बहुत बडा है। परंतु अपना घर तो अपना होता है। वहॉ उन्हे अपने घर जैसा अनुभव नहीं होता। शुरु–शुरु में बहु–बेटे के जीवन में माता–पिता के अधिकार से हस्तक्षेप करते है। परंतु उँचे ओहदे पर पहूँचे हुए बेटे को उनका हस्तक्षेप रास नहीं आता। अतः धीरे–धीरे वृध्द माता–पिता स्वयं को उसी माहौल में ढालने का प्रयास करते है। बुढापा एक ऐसी अवस्था है कि किसी भी काम को करने का मन तो बहुत होता है पर शरीर साथ नहीं देता जैसे कि मॉ किचन में चाय बनाने के लिए जाती है तो मिट्टी के तेल की बोतल गिर जाती है। बहू रीमा अपने पति से कहती है उनके जाने से काम और बढ जाता है, पर ये बूढे लोग... बुढे लोग सुनकर मॉ की ऑखें भरभरा आयी। एक दिन बहु और बेटा बाहर खाने के लिए गए थे। मॉ के मन में आया अपने लिए खीर और सादी सब्जी बनाइ पर पति कहते है खीर नहीं। जब बहू और राजेन रहें तब बनाना। शब्द थोडे ही थे पर अर्थ गहरा और विस्तृत था। उन्हें रिटायर्डमेंट के बाद अपना घर छोडने का दर्द अधिक था। अपने घर का सारा सामान यूँ ही वहॉ छोड दिया था। मॉ बहुत दुखी होती है कि उन्होंने जान–बुझकर जितना कुछ अपने घर छोडा था। अनजाने में उससे कहीं ज्यादा छूट गया था जो जीवन में फिर कभी न मिल सकेगा। अपने ही बेटा बहू के आगे वृध्द माता–पिता विवश है। अपने आप को कभी असहाय तो कभी अपराधी सा महसूस करते है।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2394-3114
Vol-40-Issue-89-March -2020

एक दिन छोटा बेटा रणधीर आता है। रणवीर और राजन दोनों मिलकर निर्णय लेते है कि पिता रणधीर के पास रहेंगे और माँ राजेन के पास। जब बेटे दो है तो खर्चा एक ही क्यों उठाए? पति अपने पत्नी से कहते है–''मैं छोटे बेटे के साथ जा रहा हूँ।'' अपने कठोर संयम को नियंत्रित करते हुए वे आगे कहते है –''कुछ नहीं, यूँ ही काफी दिन हो गए यहाँ रहते। थोडा घुम–फिर कर आना चाहिए।'' पत्नी भी कहती है कि, ''मुझे भी तो यहाँ रहते.......।'' पति अपने भीतर के व्दंव्द को अभिव्यक्त करते हुए कहते है कि, ''मैं आ जाऊँगा तब तुम जाओगी।'' दोनों चूप हो जाते है, एक–दूसरे को देखते रहते है, यूँ लगा कि आँखे पथराकर किसी एक दिशा में टिक गयी।उन आँखो की अथाह कातरता में बस एक ही गहराता सवाल 'हमारा अपराध' माता–पिता को अलग करने के पहले का निर्णय दोनों बेटों ने मिलकर किया था। निर्णय लेने के पहले माता–पिता को पूछना जरुरी भी नहीं समझा। पति कहते है कि, ''अभी यहाँ बेबी छोटी है, तुम यहाँ रहेगी। सात–आठ महिने बाद छोटी की डिलीवरी होगी फिर तुम वहाँ चली जाओगी.... छोटे के पास।'' नयी पीढी को माँ एक नौकरानी और आया के रूप में चाहिए। यही स्थिति प्रस्तुत कहानी में माँ की है।

पति–पत्नी को एक–दूसरे की वृध्दावस्था में जितनी जरूरत होती है उतनी परिवार का शुरुआत करते समय नहीं होती। इन बच्चों को माता–पिता को अलग करने का हक किसने दिया। इसी का सजीव वर्णन इस कहानी में हुआ है। लेखिका प्रश्न उठाती है कि माता–पिता को अलग करने का अधिकार किसने दिया। वे एक–दूसरेके बिना बहुत असहाय से है। बिना प्राणों के जीवन के समान है उन्हे ये निर्वासित जीवन क्यों? और किस अपराध के लिए?

उषा प्रियंवदा की वापसी कहानी रिटायर्ड गजाधर बाबू की पीडा और विशाद का गहरा चित्र उपस्थित करती है। गजाधर बाबू 35 साल रेल्वे में नौकरी करने बाद रिटायर्ड होकर अपने घर वापस आते है। रेल्वे क्वाटर छोडते समय उनके मन में अपने परिवार से मिलने की खुशी है जिसमें उन्हें पत्नी बच्चों का भरपूर स्नेह की अपेक्षा शामिल है। वे फिर से अपनी पुरानी जिंदगी जीना चाहते है। परंत घर आने पर उन्हें केवल उपेक्षा मिलती है। परिवारवाले उन्हें केवल पैसा कमाने का साधन मानते है। उन्हें घर के मामले में हस्तक्षेप करने से मना कर देते है। उन्ही के घर में गजाधर बाबू को रहने का कोई स्थान नहीं बचा था। जैसे किसी मेहमान के लिए कुछ अस्थायी प्रबंध कर दिया जाता है उसी प्रकार बैठक में कुर्सी के बीचोंबीच चारपाई डाल दी जाती है। धीरे–धीरे वह स्थान भी वहाँ से हटा दिया जाता है और एक ऐसे कमरे में जहाँ आचार, रजाई, कनस्तर रखे हुए है उसके बीच में चारपाई डाल दी जाती है।

गजाधार बाबू को अपने ही घरवालों से घोर असंतोष, दुख मिलता है। उनकी घर आने की सारी खुशी एक गहरी उदासीनता में बदल गई। उन्हें घर में केवल घुटन, निराषा, वेदना, दुख, पीडा ही मिलती है। अंततः वे अपने लिए नौकरी की तलाश कर लेते है। उन्हें सेठ रामजीमल की चीनी मिल में नौकरी मिल जाती है। बेटा नरेंद्र तत्परता से उनका बिस्तर बाँधता है और रिक्शा बुलाता है। गजाधर बाबू रिक्शा में बैठते है। बस केवल एक दृष्टि अपने परिवार पर डालते है फिर दूसरी ओर देखने लगते है। रिक्शा जाते ही उनके घर का कोई सिनेमा की तैयारी करता है तो कोई चौके की। पत्नी नरेंद्र को कहती है –''अरे नरेंद्र बाबूजी की चारपाई कमरे से निकाल दे जिसमें चलने तक की जगह नहीं है।'' यहाँ गजाधर बाबू की पीडा और विषाद चरमसीमातक पहुँच जाता है। बडे घर में उनकी जगह केवल 'चारपाई' तक सीमित रह जाती है।

'मधु कांकरिया' की 'उडान' कहानी 'उषा प्रियंवदा' की 'वापसी' कहानी की याद दिलाती है। यहाँ प्रमुख पात्र है समीर। दो वर्ष पहले रिटायर्ड हो चुके है। अपने दो बेटे, बहू एवं पत्नी के साथ संयुक्त परिवार

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2394-3114
Vol-40-Issue-89-March -2020

में रहते है। समीर को अपने बहू–बेटों से शिकायत नहीं है। उन्हें शिकायत है अपनी पत्नी से क्यों कि पत्नी की जीवन से समीर बाबू हट चुके है। पत्नी केवल अपने बेटों के आगे–पीछे घुमती है। समीर को हर बात पर झिडक देती है। नौकरों की तरह घर एवं बाजार के काम करवाती है। इसी कहानी में दूसरा पीडित पात्र है समृध्द जो समीर का मित्र है। वह विधुर है। उनकी बहु आज्ञाकारी है। सुबह–श्याम ससूर के चरण छूती है। बहू को हिरे–मोती से जुडने की तमन्ना थी इसलिए उन्होंने स्टाफ का बोनस आधा कर दिया। एक दिन तबियत खराब होने पर उन्होंने बहू से खाने के लिए दही की मॉग की। बहू मीठे स्वर में जवाब देती है, ''दही तो जमाया ही नही।'' बाद में पोते के कमीजपर दही के छींटे दिखे इसलिए पोते को – बहला फुसलाकर पूछा कि, ''क्या खाया था?'' पोते ने जवाब में कहा ''दही खाया था।''सुनकर उन्हें बडा गुस्सा आया। जिसे जीवन की सारी पूँजी थमायी वह एक कटोरे दही के लिए झूठ बोल गई। अभी भी समृध्द के नाम पर शेयर थे। उन्होंने अपना सारा रूपया इकट्ठा किया और एक ट्रस्ट के हाथों में सौंप नीड से उड चले। अनंत आकाश में उडान भरने के बाद वे आदिवासियों के उत्थान के लिए समर्पित संस्था आदिवासी कल्याण आश्रम से जुडे। इस कहानी में समृध्द घुट–घुट कर नहीं जीते अपने सम्मान के लिए वे परिवार से विद्रोह करते है। आदिवासीयों के बीच काम करते समय समृध्द ने यह सत्यान्वेशण किया था। ''जब तक जीवन संकुचित रहेगा। कोई बडी खुशी हासिल नहीं होगी। आज के भौतिकवादी युग में नीजि एवं रिक्तम संबंध भी तब तक बने रहते है जब तक वह व्यक्ति रिश्तों की आर्थिक आकांक्षा की परीक्षा में खरा उतरे। अन्यथा उसका मोल नही के बराबर रह जाता है।''

'शशिप्रभा शास्त्री' की 'गुंबद' कहानी वृध्द माता की विवशता की कहानी है। अपने संपूर्ण जीवन में माता–पिता अपने संतान की मनोकामना पूर्ण करने के लिए व्यतित करते है। परंतु वृध्दावस्था में उन्हें संतान से सुख मिलने के बदले दुख मिलता है। माता–पिता के प्रेम, ममता, त्याग, सेवा का कोई मोल संतान की दृष्टिमें नहीं रहता।उँचे–उँचे ओहदेपर विराजमान संतान को माता–पिता की इच्छाओं को कुचलकर उनका दिल तोड देते है। सफल संतानों से संपन्न दिखनेवाले माता–पिता वास्तव में कितने निरीह होते है। यह प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने दर्शाया है।

प्रस्तुत कहानी की मॉ विधवा है। उसके कठोर परिश्रम के कारण सुकांत फौज में बडा अफसर बनता है। बहू के आकस्मिक निधन से सुकांत तथा उसके बच्चों को मॉ ही संभालती है। आगे चलकर सुकांत परित्यकता कौशल से पुनर्विवाह करता है। कौशल आधुनिक विचारोंवाली है। पडोस के बच्चे मॉ के पास कटाई–बुनाईसिखने के लिए आते है। कौशल इस पर आपत्तिउठाती है। मॉ ने उसी कला के बलबूते पर बेटे को इतना बडा आदमी बनाया था। यह कला उसके, अस्तित्व की पहचान है। परंतु आज कौशल को अपना 'स्टेटस' महत्त्वपूर्ण लगता है। मॉ दुखी होती है। अपनी पहचान खोकर वह जीना नहीं चाहती। ऐसी हालत में वह अपने अस्तित्व और अस्मिता की रक्षा करने के लिए बेटे का घर छोड अपने घर वापस आती है। मॉ सोचती है, क्यों बन जाते है बच्चे माता–पिता के शौक के दुश्मन? बचपन में उनकी मॉगो को पूरा करनेवाले माता–पिता की चाहतों को अब वे सनका क्यों मानते है? मॉ अपनों के व्दारा ही रौंदी गई थी। पर वह एक 'गुंबद' है जो आवाजे बाहर नहीं जाती, भीतर ही टकराती है। मॉ भी अपना दुख किसी से कहती नही। अंदर ही अंदर घुटती रहती है।

बुजुर्गोंकी भावनाओं का युवाओं के लिए कोई महत्व नहीं होता। उनकी भावनाओ को समझने का प्रयास नहीं होता। यहीं दर्द टीस बनकर उन बुजुर्गो को सदा सालता रहता है। इसी पीडा को शशिप्रभा जी ने प्रस्तुत कहानी में दर्शाया है।

Copyright © 2020 Authors

 ISSN: 2394-3114
Vol-40-Issue-89-March -2020

कितनी विडंबना है पूरे परिवार को एक सूत्र में बांधनेवाले, सबको सुखी आनंदी रखने के लिए संघर्ष करनेवाले व्यक्ति वृध्दावस्था में अकेले, असहाय होते है। जिन्होंने परिवार की नीव रखी जिनके बलबूतेपर घर की छत बनी वही उसी घर में एक कोने में पडा रहता है। या उसी घर से उसका निष्कासन भी हो जाता है। पिछले साल अलिबाग में एक घटना घटित हुई। एक बेटा माँ को लेकर बस में बैठा। उन्हें मुंबई जाना था। बेटा बस स्टाप पर ही कुछ लाने के बहाने से उतर गया। बस चल पडी। कंडक्टर टिकट निकालने आया तो यह बात खुल गई। यह तो सामान्य परिवार की बात है। रेमंड के मालिक विजयपत सिंघानिया ने अपने सारे शेयर अपने बेटे गौतम के नाम कर दिए। लेकिन अब उसी बेटे ने उन्हें बेसहारा छोड दिया है। आज वे सडकों पर धूम रहे है। 78 वर्षीय विजयपत अपने अधिकारों के लिए मुंबई हाई कोर्ट में लढ रहे है। ऐसे अनेक उदाहरण है। आज की पीढी के लिए माँ बाप एक सीढि की तरह है जिसपर पॉव रखकर वे आगे निकल जाते है और फिर उस सीढि को लाथ मार देते है। परंतु माँ बाप सीढि की पहली पायदान नहीं होते वे पेड की जड होते है। पेड कितना भी बडा, हराभराक्यों न हो जाए इसकी जड काटने से वह हराभरा नहीं रहे सकता। बल्कि जड मजबूत करने से हरभरा होता है। बूढ–बुजुर्गों के अनुभवों–परामर्शों से लाभ उठानेवाली युवा पीढी ही नव–निर्माण कर पाती है।

वृध्दों की पीडाजनक गाथा की निर्माता आज की नयी पीढीहै। पुरानी पीढी और नयी पीढी के बीच एक समझदारी का पूल होता था वह उध्वस्त हो गया है।उस पूल को फिरसे बनाना होगा। वृध्दों के सम्मान हेतु विकल्प की तलाश की जानी चाहिए। निम्न तरीकों से वृध्दों के सम्मान में वृध्दि हो सकती है....

1. वृध्दों के सम्मान हेतु जनचेतना जागृत करनी होगी।
2. वृध्दों की बेहतरी के लिए विशेष योजनाओं का क्रियान्वयन होना आवश्यक है।
3. वृध्दों के भविष्य की सुरक्षा का उत्तरदायित्व देश या राज्य को अपने हाथो में लेना चाहिए। जैसे वृध्दों के लिए नाना–नानी पार्क या ऐसे विश्राम गृह जहॉ उन्हें जीवन की हर सुविधाएँ खेल, मनोरंजन, ग्रंथालय, वाचनालय, अस्पताल आदि उपलब्ध हो।
4. पीडित वृध्दों की देखभाल देश राज्य व्दारा हो। उन्हे अस्पताल और औषधालय की उपलब्धि मुफ्त में हो।
5. जहॉ पर वृध्द जनों के अधिकारों का हनन हो रहा है वहॉ कडी कारवाई की जानी चाहिए।
6. परिवार के निणयों में वृध्दजनों को शामिल किया जाए ताकि उन्हें अपने अस्तित्व का अहसास हो।
7. बुजुर्गो को केवल खाना–पिना मिलना यहीं आवश्यकता नहीं होती। उन्हें आवश्यकता होती बेटे–बेटियों के सहवास की, संवाद की। परिवारवाले समय निकालकर उनसे पास बैठकर सुसंवाद प्रस्थापित करे। ताकि उन्हें अकेलापन महसूस ना हो।
8. अवकाशप्राप्त वृध्दोंजनों की पेन्शन आदि सरकारी काम शीघ्रगति से हो जिससे उन्हे कोई मानसिक कष्ट ना हो।
9. वृध्दजन अपनी पीडा, वेदना को दूर करने का स्वयं भी प्रयास कर सकते है। महाराष्ट्र के डोंबिवली शहर के रहनेवाले राधाकृष्ण भट को जेष्ठ नागरिकों की होनेवाली पीडा देखी। जेष्ठ नागरिकों को वृध्दावस्था में होनेवालो मानसिक कष्ट, पीडा, वेदना को नष्ट केलिए 1980 में उन्होंने 'जेष्ठ नागरिक संघ' की स्थापना की। अब इस संघ का काम गॉव गॉव तक पहूँच गया है। संघ के व्दारा पीडित वृध्दों को मदद की जाती है। उनके लिए हेल्थ कॅम्प का आयोजन होता है। वृध्दजनों को ऐसी सामाजिक संस्थाओं में शामिल होकर दूसरों की पीडा को दूर करना चाहिए परोपकार

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2394-3114
Vol-40-Issue-89-March -2020

से आत्मिक सुख मिलता है। मैं कांदिवली के एक कॉलेज में कार्यशाला हेतु गई थी। वहाँ एक चौक में संध्या के समय बहुत ट्राफिक थी। वहाँ मैंने देखा दो–तीन वृध्दजन ट्राफिक पुलिस का काम कर रहे थे। वे अपने आपको काम मे व्यस्त रख रहे थे और यह काम वे स्वयं अपनी मर्जी से कर रहे थे। समाज के लिए कार करने का यह एक अच्छा एहसास उनके मन में था। ऐसा ही एहसास यदि सब वृध्दजनों के मन में निर्माण हो तो उनका जीवन आनंददायी बन सकता है। यहाँ फ्रांसीसी लेखक अनातोले का कथन याद आता है –''काश बुढापे के बाद जवानी आती।'' उनका यह कथन बडा ही सटिक और सांकेतिक है। वृध्दावस्था में जवानी सी ताकत, स्फूर्ति मिल जाए तो वे पहले से बेहतर काम कर सकते है। अतः वृध्दों की ओर एक नई दृष्टि से देखने की आवश्यकता है जिसमें सम्मान हो संवेदना हो, प्रेम हो, जीवन जीने की आकांक्षा हो। उनके चेहरे पर से खुशी झलके। रोहित अपने शेर में कहता है –

> ''चेहरे की चमक और घर की उँचाइयों पर मत जाना
> घर के बुजुर्ग गर हँसते दिखाई पडे तो
> समझ लेना आशियाना अमीरों का है।''

संदर्भ–

आलोच्य कहानियाँ – 1) निर्वासित – सूर्यबाला, 2) वापसी – उषा प्रियंवदा,
3) उडान– मधु कांकरिया, गुंबद – शशीप्रभा शास्त्री
4) इंटरनेट

jansatta.com
deshajman.blogspot.com
deshbandhu.com.in

Copyright © 2020 Authors